माध्यमिक स्तर पर एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के आलोक में विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता का अध्ययन

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
की
पी-एच.डी.(शिक्षाशास्त्र)
उपाधि
हेतु
शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका
डॉ. सरिता गोस्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्षा
एम.ए.(हिन्दी, अंग्रेजी), एम.एड.
नेट(शिक्षाशास्त्र),पी-एच.डी.(शिक्षाशास्त्र)

शोधकर्त्री
दीपा रानी
नामांकन संख्या–IIMTU/A-1874
deeparani1973@gmail.com

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय
गंगा नगर कॉलोनी, मवाना रोड, मेरठ (उ.प्र.)

1. प्रस्तावना

किसी भी देश के विकास में शिक्षा की एक अहम भूमिका होती है। कोई देश तभी विकास कर सकता है जब तक वहां के नागरिक शिक्षित होंगे। देश में संवैधानिक मूल्यों जैसे न्याय, स्वतंत्रता, समानता, विविधता का सम्मान करना आदि का विकास शिक्षा के द्वारा सम्भव है। शिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी प्रकार के विचारों का सम्मान करे, एक दूसरे के भावों को समझकर मिलजुलकर रहने के कौशल का विकास करे, इससे देश में शान्ति व्यवस्था बनाए रखा जा सकता है। किसी भी देश का आर्थिक और सांस्कृतिक विकास तभी होगा जब वहां के लोग शिक्षित होंगे। इस कारण 2001 में सर्व शिक्षा अभियान आया और शिक्षा का अधिकार कानून 2009 को लाया गया। इसमें छह से चौदह वर्ष के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा की बात की गई। देश के विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण तत्व है।

शिक्षा में गुणवत्ता के लिए लगातार प्रयास होते रहे। 1964 में कोठारी आयोग की संस्तुतियों के बाद सेवारत शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थाओं को प्रारम्भ किया गया था। चौथी पंचवर्षीय योजना (1969–74) में पहली बार शिक्षक प्रशिक्षण के लिए अलग से धनराशि आवंटित की गई। 1982 में शिक्षकों के प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) और शैक्षिक उन्नयन पर सुझाव देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षक आयोग प्रथम तथा राष्ट्रीय शिक्षक आयोग II बनाया गया। 1986 ई. में नयी शिक्षा नीति के बाद देश में सभी जिलों में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई। 1973 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) की स्थापना कर उसको शिक्षक शिक्षा (Teacher Education) की केंद्रीय नियंत्रक संस्था बनाया गया।

1990 के वैश्वीकरण के दौर में विकास की ओर तेजी से बढ़ते भारत में भी शिक्षा को लेकर आगे बढ़ने की दौड़ थी। ऐसे में भारत में पुस्तकों में ज्यादा से ज्यादा तथ्यों को डालना और बच्चों को इसको रटाने पर जोर दिया गया। पाठ्यपुस्तकें भी तथ्यात्मक ही थी। बच्चों को विषयवस्तु से जोड़ने के लिए स्थानीयता से नहीं जोड़ा जाता था, उनको करके देखने का मौका नहीं मिलता था। इस कारण उन तथ्यों को याद करना तथा ज्यादा से ज्यादा किताबों के बोझ को देखते हुए शिक्षाविदों ने भविष्य को लेकर चिन्ता व्यक्त की। 1992 में भारत सरकार ने प्रो. यशपाल के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय सलाहकार कमेटी का गठन किया गया। जिसमें विद्यालयी बच्चों के बस्तों के बोझ को कम करने के उपाय बताए गए। कमेटी ने अपने अध्ययन में पाया कि इस समय बच्चों में योग्यता और क्षमता की अपेक्षा डिग्रियों को महत्व दिया जा रहा था इस कारण बच्चों पर पढ़ाई के बोझ की समस्या ज्यादा थी।

समिति ने प्रतिस्पर्धाओं तथा व्यक्तिगत उपलब्धियों को पुरस्कृत करने को हतोत्साहित किया क्योंकि इसके कारण बच्चे हर्षित या आनंदपूर्ण अधिगम से वंचित रह जाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को गृह कार्य के बोझ तले नहीं दबाना चाहिए। उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में गृहकार्य जहां भी अनिवार्य हो गैरपुस्तकीय होना चाहिए। इस समिति ने एक कठोर, पूर्ण व गहन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की सिफारिश की ताकि विद्यालयों में संतोषजनक अधिगम सुनिश्चित हो सके और अध्यापक प्रशिक्षार्थी में स्वःअधिगम और स्वतंत्र चिंतन की योग्यता प्राप्त करा सके।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्र निर्माण से दूर होकर सैद्धांतिक व सूचनात्मक होती जा रही है। समाज एवं उसकी समस्याओं से शिक्षा का सम्बंध–विच्छेद सा हो गया है। शिक्षा प्रणाली में समग्रता का अभाव–सा है, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा जैसे कई स्तर बन गए हैं,

जहां माध्यमिक शिक्षा के प्रति सरकार का दृष्टिकोण उदासीन है, वहीं प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण एवं उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण हो रहा है। माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा की आधारशिला तथा तैयारी की अवस्था है। यदि इसकी नींव ही कमजोर हो तो फिर उच्च शिक्षा का भवन कैसा बनेगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा की कड़ी में सबसे कमजोर, उपेक्षित एवं दोयम दर्जे की भूमिका का निर्वाह कर रही है। अतः आवश्यकता है कि माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन कर इसे सशक्त एवं जनोपयोगी बनाया जाये।

शिक्षा के उद्देश्य और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का निर्माण हुआ। इसके अनुरूप पाठ्यक्रमों का निर्माण हुआ। तत्पश्चात् पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इसका उद्देश्य था कि विद्यालयों में ऐसे अवसर छात्रों को प्रदान किए जा सके कि छात्र प्रश्न पूछकर, चर्चा एवं चिंतन करके अवधारणाओं को आत्मसात कर सके और वांछित परिवर्तनों को व्यवहारिक बनाने में सक्षम बन सके। छात्र विद्यालयों से सीखे हुए ज्ञान और कौशल का उपयोग अपने जीवन में कर पाएं। इस प्रकार छात्र के सर्वांगींण विकास के लिए एक वृहत् स्वरूप तैयार किया गया। आशा थी कि इससे विद्यार्थी में चिंतन कौशल, सृजनात्मकता और भावात्मक परिपक्वता का विकास हो पाएगा और वह देश का एक योग्य नागरिक बन सकेगा।

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा में एक बड़ा बदलाव आया है। शिक्षक केन्द्रित शिक्षण के स्थान पर बाल केन्द्रित शिक्षण करने की बात की जा रही है, ताकि छात्र विषयवस्तु के साथ संवाद करते हुए स्वयं ज्ञान का निर्माण कर पाएं। शिक्षा में रटने की प्रवृत्ति शुरूआत से ही थी क्योंकि उस समय का उद्देश्य अलग था लेकिन वर्तमान समय में उद्देश्य बदलने के बाद भी शिक्षक अपने पढ़ाने के तरीकों में बदलाव नहीं ला पा रहे हैं। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल, सृजनात्मकता को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पा रहा है। विद्यार्थी जीवन की चुनौतियों का सामना कर पाने में कठिनाई महसूस कर रहें हैं और समाज में एक–दूसरे की निर्भरता को भी नहीं समझ पा रहे हैं। जिस कारण लोगों को समाज के साथ सामंजस्य बनाने में कठिनाई हो रही है। इस प्रकार के द्वंद से समाज में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना, संवेदनशीलता जो शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में से है का विकास अपेक्षाकृत कम हो रहा है। परिवार और शिक्षा के माध्यम से छात्रों को भावात्मक स्तर को मजबूत बनाने के लिए उचित मार्गदर्शन भी नहीं मिल पा रहा है।

इन सभी समस्याओं के चलते नई शिक्षा नीति के आलोक में एन.सी.एफ. 2005 का निर्माण किया गया और शिक्षकों के लिए दिशा निर्देश दिए गए। एन.सी.एफ. 2005 के दस्तावेज में शिक्षा के उद्देश्य के साथ उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के तरीके भी सुझाए गए हैं। दस्तावेज में सुझाए गए ढांचे के अनुसार एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन किया गया। इन पुस्तकों में इस प्रकार के प्रश्न, अभ्यास, स्टडी, चर्चा के लिए प्रश्न को रखा गया ताकि विद्यार्थियों में चिंतन कौशल, सृजनात्मकता, भावात्मक परिपक्वता, संवेदनशीलता आदि गुणों का विकास हो पाए।

2. समस्या की पृष्ठभूमि

पिछले कुछ दशकों में शिक्षा में एक बड़ा बदलाव आया है। इस समय अध्यापक केन्द्रित शिक्षा की बजाय बाल केन्द्रित शिक्षण पर बल दिया जा रहा है ताकि छात्र स्वयं ज्ञान का

निर्माण कर पाएं। अभी तक यह देखा गया है कि यदि बच्चों को तथ्यों को रटवाया जा रहा है तो उनके चिन्तन कौशल, सृजनशीलता को स्थान नहीं मिल पाता है। समाज के साथ सामन्जस्य बनाने तथा छात्रों के भावात्मक पक्ष को मजबूत करने के लिए उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पा रहा है।

हमें शिक्षा के द्वारा एक वैश्विक नागरिक तैयार करना है। यह तब संभव है जब कि बच्चों को रटने से मुक्त करके उन्हें स्वयं ज्ञान सजृन करने के मौके दें। भारत सरकार की विभिन्न शैक्षिक नीति और आयोगों के सुझावों के बावजूद सरकारी अध्यापकों की व्यवसायिक कौशलों में अपेक्षित सुधार दृष्टिगत नहीं हो रहा है।

एन.सी.एफ. 2005 को लागू हुए लगभग 14 वर्ष हो गए। इस मध्य एन.सी.एफ. 2005 के आलोक में एनसीआरटी की पाठ्यपुस्तकें भी स्कूलों में लागू की गई है। प्रस्तावित अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा यह अध्ययन किया जाएगा कि इस पाठ्यक्रम के लागू होने के बाद छात्रों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता का विकास किस प्रकार से हो रहा है?

3. समस्या कथन

शोधकर्त्ती के प्रस्तावित शोध कार्य में "माध्यमिक स्तर पर एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के आलोक में विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता का अध्ययन" किया जाएगा।

4. शोध समस्या में सन्निहित प्रत्ययों की व्याख्या

4.1 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एन.सी.एफ.2005)

देश में सरकार, शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों को बेहतर दिशा देने के लिए 2005 में शिक्षाविदों द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) प्रस्तुत किया गया। एन.सी.एफ. 2005 में देश की शिक्षा व्यवस्था में आई विकृतियों के निराकरण तथा बच्चे सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें इसके लिए पांच निर्देशक सिद्धांतों को शामिल गया है–

(1) ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना चाहिए।
(2) पढ़ाई रटंत प्रणाली से मुक्त हो।
(3) पाठ्यचर्या का इस प्रकार संवर्धन हो कि वह बच्चों को चहुंमुखी विकास के अवसर प्रदान करे।
(4) परीक्षा को अधिक लचीला बनाना तथा उसको कक्षा की गतिविधि से जोड़ना।
(5) बच्चों में ऐसी सोच का विकास करना ताकि वे अपने अंदर प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास कर सकें।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एन.सी.एफ. 2005) में यह बताया गया कि ''रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में अधिगम ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सभी छात्रों को सीखने के अवसर मिलते हैं और सभी सीखने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इसके लिए स्कूलों द्वारा ऐसे अवसर प्रदान देने चाहिए जिसमें छात्र प्रश्न पूछ कर, विचार विमर्श कर व चिंतन करके अवधारणाओं को समझ पाए और नये ज्ञान का सृजन करे। इस दस्तावेज में शिक्षक को पाठ योजना बनाकर अध्यापन कराने पर जोर दिया गया है। इसमें यह बात की

गई है कि छात्रों को सिर्फ तथ्यों को रटवाने से विषय के प्रति रुचि जाग्रत नहीं होती है और वे स्वयं सीखने को उत्सुक नहीं हो पाते।''

सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद देखने में यह आ रहा है कि शिक्षा की गुणवत्ता में गहरी विकृति आ गई है। स्कूलों की शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आ रही है क्योंकि तथ्यों को रटाना और नीतियों के पीछे के कारणों का पता ना होना है। कम संसाधन तथा प्राइवेट स्कूलों के प्रभाव के कारण सरकारी स्कूलों में कम नामांकन हो रहा है। सरकारी स्कूलों में प्रथम पीढ़ी लर्नर ही रह गए हैं। अध्यापकों को इनको किस प्रकार से पढ़ाना है इसको क्रियान्वयन ना कर पाने के कारण बच्चों का ड्रॉप आउट का उच्च स्तर चिंता का कारण है। सरकारी विद्यालयों में उन लोगों के ही बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं जो साधनहीन हैं। चूंकि ग्रामीण और निर्धन वर्ग के बच्चों के लिए सरकारी विद्यालय ही विकल्प है। यह स्थिति एक लोकल्याणकारी देश के लिए एक बड़ी चिंता का कारण है।

नई शिक्षा नीति 2020 में उल्लेख किया गया है ''शिक्षाक्रम को इस प्रकार दिशा दी जाएगी कि विद्यार्थियों का समग्र विकास हो और उनके उच्च स्तर के हुनर और कौशल जैसे तार्किक, चिंतन, सृजनात्मकता, सहयोग की भावना, टीम में काम करने के रुझान, सामाजिक सरोकार और जिम्मेदारी का भाव, बहुभाषिकता और डिजिटल लिटेरेसी आदि को विकसित किया जा सके।''

4.2 चिन्तन कौशल

मनोविज्ञान में चिन्तन से तात्पर्य विचार करने की उस मानसिक प्रक्रिया से होता है जो लोगों के सामने समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान खोजने के लिए शुरू होती है और तब तक चलती है जब तक उस समस्या का हल नहीं खोज लिया जाता।

वुडवर्थ (1921) के अनुसार– "चिन्तन किसी समस्या का हल खोजने की मानसिक क्रिया है।" **वैलेनटाइन** के शब्दों में–"चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए किया जाना चाहिए जिसमें विशेष रूप से श्रृंखलाबद्ध विचार किसी लक्ष्य या उद्देश्य की ओर प्रवाहित होते हैं।"

गिलमर (1970) के अनुसार–" चिन्तन समस्या समाधान की वह प्रक्रिया है जिसमें हम प्रत्यक्ष क्रियाओं के स्थान पर विचारों तथा संकेतों का प्रयोग करते हैं।"

गैरट (1968) के शब्दों में – "चिन्तन एक प्रकार का ऐसा व्यवहार है जो प्रायः अस्पष्ट तथा अदृश्य होता है जिसमें सामान्य रूप से संकेतों (प्रतिमाओं, विचारों, प्रत्ययों) का प्रयोग किया जाता है।"

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि चिन्तन वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य किसी समस्या को हल करने के लिए मानसिक विचारों की श्रृंखला का प्रयोग करता है। इन मानसिक विचारों को उत्पन्न करने की योग्यता चिन्तन कौशल कहलाता है। छात्रों में चिन्तन कौशल का एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। चिन्तन के द्वारा मनुष्य अनेक प्रकार की समस्याओं को हल करता है और सीखने की प्रक्रिया में शामिल होता है। छात्रों में चिन्तन कौशल को विकसित कर उनके सीखने के कौशल को और सुदृढ़ किया जा सकता है।

- जब मनुष्य किसी समस्या को हल करते हुए पूर्व अनुमान का प्रयोग करता है।
- जब समस्या व्यक्ति को उनके उद्देश्य तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न करती है इस कारण चिन्तन की आवश्यकता होती है।
- समस्या समाधान में जब चिन्तन क्रिया प्रारम्भ होती है तो उसमें प्रतिमाएं, पेशीय क्रियाएं तथा आन्तरिक संभाषण भी पाया जाता है।
- मनोवैज्ञानिकों ने चिन्तन के छः प्रकार बताए हैं–1. प्रत्यक्षात्मक चिंतन, 2. कल्पनात्मक चिन्तन, 3. प्रत्यात्मक चिन्तन, 4. तार्किक चिन्तन, 5. रचनात्मक चिन्तन तथा 6. आत्मविमोही चिन्तन।

एन.सी.एफ. 2005 में चिंतन कौशल – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 में कहा गया है, ''पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना, वाद–विवाद, व्यावहारिक प्रयोग व ऐसा चिंतन जिससे सिद्धांत बन सकें और विचार की रचना हो सके, से सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं। स्कूलों द्वारा ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए ताकि बच्चे प्रश्न पूछकर और चर्चा और चिंतन कर अवधारणाओं को आत्मसात करें या नए विचार रखें।''

शिक्षा के क्षेत्र में चिन्तन कौशल की बहुत उपयोगिता है। प्रारम्भ में बच्चे प्रत्यक्ष विधि से सीखते हैं, परन्तु इसके बाद जैसे–जैसे उनके अनुभव बढ़ते जाते हैं वे अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर नए ज्ञान को ग्रहण करने लगते हैं। सीखने के दौरान उनके सामने जो समस्याएं उत्पन्न होती हैं, उनका समाधान वे चिन्तन द्वारा करते हैं। ज्ञानात्मक समस्याओं के समाधान में भी उन्हें चिन्तन करने की आवश्यकता होती है। मनुष्य ने अब तक जो विकास किया है वह उनके चिन्तन का ही परिणाम है। बिना चिन्तन के नई खोज हो ही नहीं सकती।

4.3 भावात्मक परिपक्वता

प्राणी की रागात्मक क्रियाओं में भाव का महत्वपूर्ण स्थान है। भाव एक ऐसा पद है जिसे सभी अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करते हैं। हम कभी सुख, कभी दुःख, कभी भय, कभी प्रेम, कभी क्रोध, कभी चिन्ता और कभी आश्चर्य का अनुभव करते हैं। इस प्रकार की बहुत सी अनुभूतियां हैं जो भाव या संवेग कहलाती हैं।

बेरोन, बर्न तथा केन्टोविज (1980) के अनुसार–"संवेग से तात्पर्य एक ऐसे भाव की अवस्था से है जिसमें कुछ शारीरिक उत्तेजना उत्पन्न होती है और फिर जिसमें कुछ खास–खास व्यवहार होते हैं।"

सैन्ट्रोक (2000) के अनुसार–"हम लोग को भाव जिसमें दैहिक उत्तेजन, चेतन अनुभूति तथा व्यवहारात्मक अभिव्यक्ति सम्मिलित होते हैं, के रूप में परिभाषित करते हैं।"

भावात्मक परिपक्वता का तात्पर्य व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसमें वह अपने संवेगों को सकारात्मक तथा संरचनात्मक ढंग से प्रत्यक्षित, नियंत्रित तथा मूल्यांकित करता है। भावात्मक परिपक्वता के द्वारा अपनी तथा दूसरों की सांवेगिक अवस्थाओं की पहचान करता है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार यह सीखी जा सकती है जबकि कुछ अन्य के अनुसार यह जन्मजात क्षमता है।

पीटर सैलोवी तथा जॉन डी मॉयर (1990) के अनुसार–" सांवेगिक बुद्धि सामाजिक बुद्धि का एक भाग है जो अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने तथा उनमें विभेद करने की क्षमता रखती है तथा जिसके द्वारा व्यक्ति अपने चिन्तन तथा क्रियाओं को निर्देशित करता है।"

एन.सी.एफ. 2005 में भावात्मक परिपक्वता – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 स्पष्ट रूप से उल्लेख करता है कि–''बच्चों को इतना सक्षम बनाना कि वे जीवन का अर्थ समझ सकें और अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें। अपने जीवन का एक उद्देश्य निश्चित करें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें तथा दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का अधिकार दे। यदि हमें कुछ करना है, तो वह है मनुष्यों की परस्पर निर्भरता को रेखांकित करना, और जैसा टैगोर कहते हैं कि जब हम स्वयं को दूसरों के माध्यम से अनुभव करें, तभी हमें सबसे बड़ी खुशी मिलती है। साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए बच्चों में, समानता की अवधारणा को पुख्ता करना भी आवश्यक है। प्रतिस्पर्द्धात्मक अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं शिक्षा को भौतिक सफलता अर्जित करने का माध्यम बनाने की ओर प्रवृत्त हो जाती है। यह समझ जो व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिस्पर्द्धात्मक सम्बंधों में रखती है, बच्चों पर बेवजह दबाव डालती है और इस प्रकार मूल्यों को विकृत कर देती है। इससे एक दूसरे से सीखने की प्रक्रिया का भी कोई परिणाम नहीं निकलता है। शिक्षा को उन मूल्यों को प्रसारित करने में सक्षम होना चाहिए जो शान्ति, मानवता और सांस्कृतिक विविधता वाले समाज में सहिष्णुता को पोषित करे।''

भावात्मक परिपक्वता अपने मनोभावों को समझने और उनको नियंत्रित करने की क्षमता को दर्शाता है। यह हमें अपनी इच्छानुसार जीवन बनाने में सक्षम बनाता है। भावात्मक परिपक्वता को मनुष्य के विचारों और व्यवहारों में देखा जा सकता है। जब लोग किसी कठिन परिस्थिति में होते हैं तब उन्हें भावात्मक परिपक्वता के स्तर से ही उन परिस्थिति का सामना करने की दक्षता मिलती है। विद्यार्थियों में भावात्मक पक्ष को परिपक्व करना शिक्षा का उद्देश्य है। इसका संबंध दक्षताओं, क्षमताओं, अभिवृत्तियों, रुचियों, संवेगों, मनोवृत्तियों व मूल्यों से होता है। भावात्मक पक्ष को मजबूत करके व्यक्ति समूह का नायक बनकर बड़ी सफलतापूर्वक समूह की विधियों का संचालन कर सकता है।

आज के समय में कठिनाईयों और प्रतियोगिता के कारण बच्चों में बेचैनी, निराशा बढ़ती जा रही है। जो व्यक्ति अपने भावों को नियंत्रित कर सकता है वह सफल हो सकता है। काम करते हुए विभिन्न प्रकार के लोग और व्यक्तित्व से मिलना होता है। इसमें हमारी भावात्मक परिपक्वता ही हमें विभिन्न व्यक्तियों से सामन्जस्य बैठाने में काम आती है। छात्रों के भावात्मक पक्ष को मजबूत कर उनको बेहतर नागरिक बनाया जा सकता है।

4.4 सृजनात्मकता

सृजनात्मकता को विद्यार्थिंयों का मौलिक गुण माना जाता है। ज्ञान के सृजन के लिए आवश्यक है कि उनमें सृजनात्मकता को विकसित किया जाए। सृजनात्मकता को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

हैमोविज एवं हैमोविज (1965)–"सृजनशीलता व्यक्ति की वह क्षमता है जो उसे नवाचार करने, आविष्कार करने तथा चीजों को इस तरह नए ढंग से रखने, जिस तरह वे पहले कभी न रखी गई हों ताकि उनके महत्व या सुन्दरता में वृद्धि हो सके।"

आईसेंक (1965) के शब्दों में–"सृजात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नए सम्बंधों का ज्ञान होता है, असाधारण विचारों की उत्पत्ति होती है तथा परम्परागत ढंग से हटकर चिन्तन किया जाता है।"

नवीन तथा अनोखे कार्य को करने या उनकी सृजनशीलता के कारण कुछ लोगों को हम लम्बे समय तक भी याद करते हैं। सृजनशीलता और चिन्तन के बीच में भी एक गहरा संबंध है। सृजनात्मकता किसी समस्या को हल करने के लिए लीक से हटकर चिन्तन करने की प्रक्रिया तथा नए उत्पाद की रचना करने की क्षमता से होता है। इस कारण शिक्षा में सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए एन.सी.एफ. 2005 में बात की गई है। सृजनात्मकता के निम्न प्रकारों का अध्ययन किया जाता है –

- आकस्मिक सृजनात्मकता
- सहज सृजनात्मकता
- संरक्षणात्मक सृजनात्मकता

एन.सी.एफ. 2005 में सृजनात्मकता –''बाल केंद्रित शिक्षाशास्त्र का अर्थ है बच्चों के अनुभवों, उनके स्वरों और उनकी सक्रिय सहभागिता को प्राथमिकता देना। इस प्रकार के शिक्षाशास्त्र में बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास व अभिरुचियों के मद्देनजर शिक्षा को नियोजित करने की आवश्यकता होती है। इसलिए शिक्षा की योजना ऐसी हो कि वह विशेषताओं व जरूरतों की विशाल विविधताओं के तहत भौतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक प्राथमिकताओं को सम्बोधित करे। हमारे स्कूल के शैक्षिक अभ्यास, सिखाने के कार्य और विद्यार्थियों के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तकें, उनके समाजीकरण और उनके सीखने में ग्रहणशीलता के गुण पर केंद्रित होते हैं। जबकि हमें उनकी सक्रियता व रचनात्मक सामर्थ्य को पोषित और संवर्द्धित करना चाहिए – उनके दुनिया से वास्तविक तरीकों से सम्बंध बैठाने, दूसरों से जुड़ने की उनकी मूल अभिरुचि या अर्थ ढूढ़ने की जन्मजात रुचि, को पोषित करना चाहिए।''

मनोवैज्ञानिकों का मत है कि नवीन तथा अनोखे कार्यों के सम्पादन में बुद्धि की अपेक्षा सृजनात्मकता का विशेष योगदान रहता है। आम भाषा में सृजनात्मकता को व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के रूप में जाना जाता है। लोगों की सृजनात्मकता उसके द्वारा समस्या के समाधान करने में लीक से हटकर चिन्तन करने की प्रक्रिया अथवा किसी नवीन उत्पाद की रचना करने की क्षमता के रूप में परिलक्षित होती है। आधुनिक युग में प्रत्येक क्षेत्र में नए–नए आविष्कार किए जा रहे हैं। इन आविष्कारों में सृजनशील लोगों का विशेष योगदान रहा है। किसी भी देश की प्रगति उन सृजनशील लोगों पर निर्भर करती है जो अपनी मौलिक सोच में समाजोपयोगी नवीन उत्पादों का सृजन कर सके।

सृजनात्मकता किसी भी व्यक्ति के कार्य करने के तरीके से व्यक्त होता है और कोई भी व्यक्ति सृजनशील हो सकता है। जैसे चित्रकार अपने चित्रों के द्वारा सृजनशीलता को व्यक्त करते हैं तथा बढ़ई अपने फर्नीचर में सृजनशीलता को दिखा सकता है। जैसे–जैसे आद्यौगीकरण और नगरीकरण का विकास हो रहा है, समाज में बहुत ज्यादा परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन की शुरुआत किसी भी व्यक्ति के द्वारा ही शुरु किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में एक स्तर की सृजनशीलता होती है और उसका विकास उसके परिवेश से घटता

या बढ़ता है। अच्छी शिक्षा, अच्छी देखभाल, सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अवसरों की व्यवस्था सृजनात्मकता को और बढ़ाने में सहायता करती है।

5. शोध अध्ययन के उद्देश्य

हमारे इस अध्ययन का उद्देश्य एन.सी.एफ. 2005 के लक्ष्यों को समझते हुए उसके प्रभावों का अध्ययन करना है। यह दस्तावेज शिक्षा की गुणवत्ता के लिए बहुत सारे निर्देशन देती है। वे किस प्रकार के निर्देशन है? ये निर्देशन शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा अध्यापकों तक पहुंचते हैं और अंत में छात्रों तक कैसे प्रसारित होते है? हमारा लक्ष्य इस दस्तावेज में दर्शित नीतियों के आलोक में सरकारी माध्यमिक स्कूलों के छात्रों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता और सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन करना है। भौगोलिक दृष्टि से शोधकर्त्ती अपने अध्ययन को उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर जिले के सितारगंज विकासखण्ड के विद्यालयों में केंद्रित करना चाहेगी।

एन.सी.एफ. 2005 के द्वारा प्रतिपादित दिशा निर्देशों के अनुसार स्कूली शिक्षा के लिए एनसीईआरटी द्वारा विकसित पाठ्यक्रम जो सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में लागू है, के आलोक में शोध के उद्देश्य निम्नवत् होंगे–

1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के चिन्तन कौशलों का अध्ययन।
    - 1.1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के तार्किक कौशलों का अध्ययन।
    - 1.2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के निर्णय लेने के कौशलों का अध्ययन।
    - 1.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन कौशलों का अध्ययन।

2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के चिन्तन कौशलों का अध्ययन।

    2.1 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के तार्किक कौशलों का अध्ययन।

    2.2 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के निर्णय लेने के कौशलों का अध्ययन।

    2.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन कौशलों का अध्ययन।

3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के चिन्तन कौशलों का अध्ययन।

3.1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के तार्किक कौशलों का अध्ययन।

3.2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के निर्णय लेने के कौशलों का अध्ययन।

3.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के आलोचनात्मक चिंतन का अध्ययन।

4. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

4.1 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

4.2 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के भावात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

5. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का अध्ययन।

5.1 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के सृजनात्मकता का अध्ययन।

5.2 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के सृजनात्मकता का अध्ययन।

6. शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तावित शोध 'माध्यमिक स्तर पर एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के आलोक में विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता का अध्ययन' हेतु शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया है –

1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के चिन्तन कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के तार्किक कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के निर्णय लेने के कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के चिन्तन कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के तार्किक कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के निर्णय लेने के कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के आलोचनात्मक चिंतन कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के चिन्तन कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3.1. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के तार्किक कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3.2. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के निर्णय लेने के कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3.3. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित

पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के आलोचनात्मक चिंतन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भावात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.1 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के भावात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4.2 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के भावात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालय एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.1 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.2 माध्यमिक विद्यालयों में एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्राओं के सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. शोध अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

इस अध्ययन में छात्रो के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता के अलग–अलग आयामों का अध्ययन किया जाएगा। एन.सी.एफ. 2005 में इन कौशलों को विकसित करने के लिए किस प्रकार के दिशा निर्देश दिए गए हैं ? अध्यापकों ने अपने विद्यालयों में किस प्रकार की प्रक्रियाएं सम्पन्न की ? उनको विद्यार्थियों ने कितना स्वीकार किया और उसके प्रतिफल क्या रहे ? यह हमारे अध्ययन का मुख्य ध्येय होगा।

इस अध्ययन के आधार पर एन.सी.एफ. 2005 की उपयोगिता और सफलता की समीक्षा की जा सकेगी। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर विद्यालयों में बेहतर अकादमिक वातावरण के निर्माण हेतु सुझाव दिए जा सकेंगे।

8. शोध अध्ययन के औचित्य

देश में समय–समय पर शिक्षा में गुणवत्ता के लिए विभिन्न शिक्षा नीतियां सरकार और शिक्षाविदों द्वारा लाए जाते रहे हैं। वर्तमान में कई वर्ष के चिंतन–मनन सुझावों के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रकाश में लाई गई है। वर्ष 2022 से इस नीति के अनुरूप पाठ्यक्रमों में बदलाव लाने के लिए प्रयास प्रारम्भ हो गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बदलाव के साथ पाठ्यपुस्तकों में भी बदलाव लाया जाएगा। शिक्षा के सभी स्तरों में सुधार के लिए बदलाव और पुर्नगठन के लिए प्रयास चल रहे हैं। ऐसे में इस पर भी विचार–विमार्श करना आवश्यक है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पहले एन.सी.एफ. 2005 के द्वारा जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इस नीति को लाया गया था। वह अपने उद्देश्य में किस सीमा तक सफल रहा? एन.सी.एफ. 2005 के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों पर इसका गुणात्मक प्रभाव किस प्रकार से परिलक्षित हुए?

एन.सी.एफ. 2005 एक बृहद शिक्षा नीति है और शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इसके अनुरूप शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रयास किये गए थे। इन उद्देश्यों में से कुछ उद्देश्यों के प्रभाव को विद्यार्थियों में देखने के लिए शोधकर्त्ता के द्वारा एन.सी.एफ. 2005 के आलोक में कक्षा 9 और 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के चिंतन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता का अध्ययन करने का विचार किया गया। इससे भविष्य में संचालित शैक्षिक योजनाओं को और प्रभावी रूप से क्रियान्वित किया जा सकेगा।

9. अध्ययन की प्रविधि

वर्तमान शोध का स्वरूप, प्रकृति तथा उद्देश्य के संदर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वर्णनात्मक शोध विधि में सर्वेक्षण विधि ही सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होती है। इसलिए प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अनुसंधान में माध्यमिक स्तर पर एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार निर्मित एवं संचालित पाठ्यक्रम के आलोक में विद्यार्थियों के चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता एवं सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया है।

10. अध्ययन की परिसीमाएं

प्रस्तावित शोधकार्य उत्तराखण्ड के ऊधमसिंह नगर जिले के सरकारी और निजी स्कूलों के 500 विद्यार्थियों के साथ किया जाएगा। इस हेतु 8 सरकारी और निजी स्कूलों का चयन किया गया। तत्पश्चात इन स्कूलों के 250 छात्राओं तथा 250 छात्रों का चयनित किया गया। इन छात्र और छात्राओं के साथ चिन्तन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता के परीक्षण हेतु उपकरणों का प्रयोग किया गया।

11. सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

अपने प्रस्तावित अध्ययन के लिए हमने अपने शीर्षक से सम्बंधित साहित्य का निम्न प्रकार से अध्ययन किया –

(1) Mehrotra, Sushma, 1995, SNDT, Women's University, Bombay, '*Effect of Imagery and Personality trends on Creativity among Pre-Adolescent Children*'

शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में सृजनात्मकता अधिक पाई गई। माता–पिता के शैक्षिक स्तर का छात्रों की सृजनात्मकता पर प्रभाव दिखाई देता है।

अभिभावकों के व्यवसाय का प्रभाव बच्चे की सृजनात्मकता पर होता है। बच्चे के आन्तरिक गुणों का प्रभाव भी सृजनात्मकता पर होता है।

(2) जैन, सविता रानी, 2002, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय *'उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गठित आयोगों द्वारा प्रतिपादित नीतियों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का तुलनात्मक अध्ययन '*

इस शोध प्रबंध में स्वतंत्रता के बाद से शिक्षा विषयक आयोग, समितियां और नीतिगत दस्तावेज एक कालक्रम में प्रस्तुत किए गए हैं। इस शोध में शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षणों को भी शामिल किया गया है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित है। शिक्षा नीतियों का स्कूलों की गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभावों को इस अध्ययन में शामिल नहीं किया गया है।

(3) Lekhi, Venita, 2005, Punjab University, Chandigarh, *'A Study of Emotional Maturity of Adolescent in Relation to Cognitive and Non-Cognitive Variables'*

आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त बालकों में बालिकाओं की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर कम पाया गया। शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर अधिक था। निजी विद्यालय के छात्रों में सरकारी छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता अधिक थी। अनुसूचित जाति के छात्रों में सामान्य जाति के छात्रों की अपेक्षा भावात्मक परिपक्वता का स्तर कम था।

(4) Patel, Rupesh, 2010, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, *´Development of Instructional Strategy for Primary School Teachers to Teach Creative and Critical Thinking Skill´*

इस शोध में शिक्षकों द्वारा सृजनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन कौशल का अध्ययन किया गया है। शोध में पाया गया कि शिक्षकों ने अपनी अनुदेशात्मक रणनीति में सुधार किया।

(5) Anu, 2010, Mahatma Gandhi University, kottam, *'Developing an Emotional Intelligence Enhancement Package for Primary School Students with special reference to Emotional Competencies, School of Padagogical Sciences'*

इसमें शोधार्थी ने पाया कि वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में हमारी शिक्षा व्यवस्था काफी प्रभावित हुई है। आज की शिक्षा में गुणवत्ता की बात की जा रही है ताकि अन्य देशों की भांति अपने देश में भी शिक्षा में गुणवत्ता को महत्व दिया जाए। बदलते समय के कारण लोगों की आवश्यकता बदल रही है, समाज का स्वरूप बदल रहा है ऐसे में लोगों की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है जो शिक्षा के द्वारा ही संभव है।

(6) शुक्ला, संजीव, अप्रैल, 2011, एनसीईआरटी, भारतीय आधुनिक शिक्षा, *'माध्यमिक शिक्षा की की गुणात्मकता : चुनौतियां और सम्भावनाएं'* पृष्ठ 38–43

मुदालियर आयोग (1952) ने लिखा कि 'स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के चरित्र निर्माण तथा नेतृत्व का प्रशिक्षण होना चाहिए, जिससे छात्र प्रगतिशील प्रजातांत्रिक–सामाजिक प्रणाली में सृजनात्मक रूप से भाग लेने में समर्थ हो सकें।' इस

लेख में लेखक ने माध्यमिक शिक्षा अभियान का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें माध्यमिक शिक्षा की विभिन्न चुनौतियों और सम्भावनाओं का विश्लेषण किया गया है। माध्यमिक शिक्षा का लक्ष्य केवल परीक्षा तक सीमित रहकर, केवल प्रमाणन तक रह गया है। शिक्षण संस्थानों से शैक्षणिक परिवेश प्रायः लुप्त हो गए हैं, न ही कक्षा में ज्ञान–पिपासु छात्र दिखते हैं, न ही उनको ज्ञान प्रदान करने वाले शिक्षक।

(7) Parashar, Ravindra Kumar, Singh, Vikramjit, May 2011, NCERT, Journal of Indian Education, *'Strategies of Classroom Transaction of Science at Upper Primary Level in the Light of NCF 2005'*

इस शोध पत्र में एनसीएफ 2005 को ऐसे दस्तावेज के रूप में देखा गया है जिससे हमारी भविष्य की शिक्षा व्यवस्था तय हो सकती है। शोध बताता है कि एनसीएफ 2005 के निर्देशानुसार पाठ्यपुस्तकें लिखी गईं, सेवाकालीन प्रशिक्षणों में विज्ञान शिक्षण के नवीन तरीकों पर चर्चा हुई परन्तु व्यवहार में शिक्षकों में परिवर्तन परिलक्षित नहीं हुआ है।

(8) Jyoti, 2012, Maharshi Dayanand University, Rohtak, *'Creativity among High School Students of Haryana in Relation to Intelligence and Level of Aspiration'*

शोध के दौरान हरियाणा के 4 जिलों के 400 छात्रों को निदर्शन के रूप में लिए गया। 8 विद्यालयों के कक्षा 9 के 50 बालक तथा बालिकाओं को अध्ययन के लिए लिया गया। अध्ययनकर्ता के द्वारा सांख्यकीय आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष से प्राप्त किया कि बालिकाओं में सृजनात्मकता बालक की अपेक्षा अधिक थी। शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनात्मकता थी। निजी विद्यालय के छात्रों में सृजनात्मकता सरकारी विद्यालय की अपेक्षा अधिक पाई गई।

(9) Srilata, B, 2012, Moulana Azad National Urdu University, Hyderabad, *'Emotional Maturity, Social Maturity and Moral Judgement of the student Teachers of Guntur District'*

अध्यापकों के भावात्मक परिपक्वता, सामाजिक परिपक्वता और नैतिक मूल्यों का प्रभाव छात्रों पर भी पड़ता है। इस शोध में आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के बी.एड. छात्रों को चयनित किया गया। अध्ययन छात्र अध्यापकों में उपरोक्त गुणों का मूल्यांकन करता है।

(10) Tiwari, Basuba, 2012, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar, Gujrat, *'Development and Tryout of Instruction Package for Enhancing of Thinking skills of Primary School Students'*

इस शोध कार्य में चिन्तन कौशल को शिक्षण के मुख्य लक्ष्य के रूप में देखा गया है। शोध प्रबंध में रचनात्मक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन और विश्लेषणात्मक चिंतन के पक्षों का अध्ययन किया गया है। यह सत्र 2010–11 पर आधारित है। उनका यह अध्ययन थाईलैण्ड के सुखोथाई प्रान्त पर आधारित है।

(11) Kapoor, Saumya, 2012, Devi Adilya Vishvidyalaya, Indore, *' To study of effect to Emotional Maturity on stress and self confidence of school students'*

उपरोक्त शोध ग्रंथ में विद्यालयी छात्रों के भावात्मक परिपक्वता, तनाव तथा आत्मविश्वास का मापन किया गया है। छात्रों के साथ–साथ अभिभावकों और भाई बहिन भी अध्ययन में शामिल हैं। छात्रों के अकादमिक उपलब्धि को तनाव और आत्मविश्वास से जोड़ा गया है। छात्रों में बढ़ते तनाव को दूर करने के उपाय सुझाए गए हैं।

(12) Dhankar, Rohit, 2012, Annual Conference, New College, Oxford, *′Curruculum Framework in search of a coherent epistemology : A case study of Indian National Curriculum Frameworks′′*

रोहित धनकर एनसीएफ 2005 की निर्माण समिति में शामिल रहे हैं। इनके द्वारा एनसीएफ 1988, 2000 और एन.सी.एफ. 2005 पर शोध किया गया है। उनका मानना है कि शिक्षा नीति निर्माण करते समय जाने–माने बुद्धिजीवी के शामिल होने से शिक्षा की वास्तविक चुनौतियां पीछे छूट जाती हैं। इस कारण एनसीएफ 2005 को बनाने में शिक्षक, राजनीतिज्ञ, अभिभावक व समुदाय से भी सुझाव लिए गए। इसमें व्यक्ति को राष्ट्र निर्माण के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन के रूप में देखा गया। इसमें छात्रों के विवेकशील चिंतन के विकास की बात की गई है। 1988 तथा 2000 के दस्तावेज में रचनावाद की बात बार–बार की गई है। एनसीएफ 2005 में रचनावाद को और विस्तार देने और कक्षा–कक्ष की प्रक्रिया में सम्मिलित करने पर जोर दिया गया है।

(13) Paul, Shimna, 2013, Manglore University, Karnataka, "*A Study on the Effectiveness of Ideal strategy in Metacognition and 5 E Model in Constructivism on the Achievement in Physics, Scientific Creativity and thinking skill among the Senior Secondary Students with different Creativity"*

शोध में भौतिक विज्ञान में उपलब्धि, वैज्ञानिक रचनात्मकता के साथ–साथ चिंतन कौशल का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उक्त अध्ययन केरल के अर्नाकुलम जिले माध्यमिक विद्यालयों के मध्यमवर्गीय छात्रों पर किया गया। यह अध्ययन विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान के विशेष सन्दर्भ में किया गया।

(14) कुमार, ललित, आलम, इम्तियाज, जुलाई, 2014, एनसीईआरटी, भारतीय आधुनिक शिक्षा, *'उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का जेण्डर, विद्यालय के प्रकार, अध्ययन के विषय एवं स्थान के सन्दर्भ में अध्ययन,'* पृष्ठ 84–93

पटना जिले के 600 उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों का चुनाव परतीय आकस्मिक प्रतिदर्श तकनीक से किया गया है। आंकड़ों के अध्ययन के लिए माध्य, मानक विचलन एवं टी मूल्य सांख्यिकी का उपयोग किया गया है। शोध अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि– (क) छात्र एवं छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। (ख) केवल सृजनात्मकता की मौलिक विभा पर निजी विद्यालयों के विद्यार्थी सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक सृजनशील हैं। (ग) विज्ञान के विद्यार्थी कला के विद्याार्थियों की तुलना में अधिक सृजनशील हैं। (घ) समग्र सृजनात्मक एवं सृजनशीलता की मौलिकता विभा पर शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सृजनशील हैं।

(15) Saha, Anshu, 2016, University of Cape town, South Africa, *'A review and analysis of the National Curriculum Framework 2005 (NCF-2005), with a focus on curriculum reform in primary (Grade I-V) education'*

शोधार्थी ने अपने इस लघु शोध प्रबंध में एन.सी.एफ. 2005 का गहराई से विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह हमारे शोध कार्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। एन.सी.एफ. 2005 और एन. सी.एफ. 2000 के सन्दर्भ में उन्होंने लिखा कि किसी भी शिक्षा नीति पर तत्कालीन सरकार का राजनीतिक प्रभाव भी होता है। शिक्षा में गुणवत्ता का अभाव आज एक प्रमुख समस्या है। इस शोध कार्य में शिक्षा की गुणवत्ता को विशेष रूप से देखने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में शोधार्थी ने एन.सी.एफ. 2005 में गुणवत्ता को तय करने वाले तत्वों की मीमांसा की है। इस परिप्रेक्ष्य में उन्होंने एन.सी.एफ. 2005 की बातों को दो भागों में बांटकर देखा है–

- संख्यात्मक दृष्टि से भाग एक में बच्चों का नामांकन, पुनः प्रवेश, पढ़ाना और सीखने का समय, बच्चों और शिक्षक का अनुपात को देखा गया है।
- मानवीय दृष्टि से दूसरे भाग में से एन.सी.एफ. 2005 में सामाजिक और व्यक्तिगत सीखने के प्रतिफल की बात की गई है। इसमें सृजनात्मकता, सहयोग, शान्ति आधारित, चिंतनशील व छात्र केंद्रित शिक्षण विधाओं की बात सम्मिलित है।

शोध में पाया गया कि भारत में शिक्षा के क्षेत्र में पहले संख्यात्मक दृष्टि से बहुत काम हुआ। इससे बच्चों का नामांकन बढ़ा है, समावेशी शिक्षा की ओर आगे बढ़े हैं। बच्चों का ड्रॉप आउट कम हो रहा है। लेकिन गुणवत्ता के मानववादी दृष्टि वाले पक्ष में ज्यादा काम नहीं हो रहा है। गुणात्मक पक्ष पर काम नहीं होने का कारण केंद्र और राज्य सरकारों का मतभेद होना, शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी, परम्परागत शिक्षण विधाओं को अपनाना, बच्चों और शिक्षकों के बीच दूरियों का होना है।

(16) Deshpande, Amruta, Balkrishna 2017, Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded (Maharashtra) *'A Study of Creativity in Relation to Guilford Intellect Model, Adjustment, Scholastic Achievements and Environment among Upper Primary School Students in Marathwada Region'*

इस शोध में मराठवाड़ा मण्डल के 8 जिलों में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में सृजनात्मकता का मापन किया गया है। उच्चप्राथमिक स्कूलों में छात्रों में शहरी, ग्रामीण और लिंग के अनुसार अध्ययन किया गया। शोध अध्ययन में विद्यार्थियों में सृजनात्मकता की मात्रा औसत पाई गई। शहरी क्षेत्रों के छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक सृजनात्मकता पाई गई। बालक और बालिका में समान रूप से सृजनात्मकता पाई गई। शोधार्थी ने सुझाव दिया है कि छात्रों को गतिविधि आधारित शिक्षा देकर उनमें सृजनात्मकता को और उभारा जाए।

उपरोक्त विभिन्न अध्ययनों में शिक्षा की गुणवत्ता को निर्धारित करने वाले विभिन्न तत्वों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। परन्तु एन.सी.एफ. 2005 के आलोक में अध्ययनरत छात्रों के चिंतन कौशल, भावात्मक परिपक्वता तथा सृजनात्मकता पर कोई अध्ययन प्रकाश में नहीं आया है। एन.सी.एफ. 2005 में सामाजिक न्याय और समानता के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक धर्मनिरपेक्ष, समतामूलक और बहुलतावादी समाज के आदर्श से प्रेरणा लेते हुए शिक्षा के कुछ व्यापक उद्देश्य चिन्हित किए गए हैं। इनमें शामिल हैं विचार और कर्म की स्वतंत्रता, दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, नयी स्थितियों का लचीलेपन और रचनात्मक तरीके से सामना करना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति और आर्थिक प्रक्रियाओं तथा सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता। इस कारण शोधकर्त्री

के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में एन.सी.एफ. 2005 के मार्गदर्शक बिन्दुओं के आधार पर अध्ययनरत छात्रों में चिंतन कौशल, भावात्मक परिपक्वता के साथ–साथ सृजनात्मकता का अध्ययन किया जाएगा।

12. अध्याय योजना

प्रथम अध्याय– समस्या की पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना
1.2 समस्या की पृष्ठभूमि
1.3 शोध समस्या में सन्निहित प्रत्ययों की व्याख्या
1.3.1 एनसीएफ 2005
1.3.2 चिन्तन कौशल का अर्थ, तत्व, कारक, सिद्धान्त, मूल्यांकन की आवश्यकता
1.3.3 भावात्मक परिपक्वता का अर्थ,तत्व, कारक, सिद्धान्त, मूल्यांकन की आवश्यकता
1.3.4 सृजनशीलता का अर्थ, तत्व, कारक, सिद्धान्त, मूल्यांकन की आवश्यकता
1.4 अध्ययन का उद्देश्य
1.5 अध्ययन की परिकल्पनाएं
1.6 अध्ययन की परिसीमाएं

द्वितीय अध्याय–सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 सम्बंधित साहित्य का महत्व
2.2 सम्बंधित शोध साहित्य की समीक्षा
2.2.1 भारतीय सन्दर्भ में चिंतन कौशल शोध साहित्य
2.2.2 विदेश के सन्दर्भ में चिंतन कौशल पर साहित्य
2.3.1 भारतीय सन्दर्भ में भावात्मक परिपक्वता शोध साहित्य
2.3.2 विदेश के सन्दर्भ में भावात्मक परिपक्वता शोध साहित्य
2.4.1 भारतीय सन्दर्भ में सृजनात्मकता पर शोध साहित्य
2.4.2 विदेश के सन्दर्भ में सृजनात्मकता पर शोध साहित्य
2.4. एन.सी.एफ. 2005 से सम्बंधित शोध साहित्य

तृतीय अध्याय– शोध का प्रारूप

3.1 शोध विधि तथा न्यादर्श
3.2 न्यादर्श का चयन
3.4 प्रमुख उपकरण
3.5 प्रमुख उपकरण का निर्माण
3.5 परीक्षण का प्रशासन और फलांकन
3.6 सांख्यिकी प्रविधि

चतुर्थ अध्याय– प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

पंचम अध्याय– शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 परिकल्पनाओं की सत्यता की पुष्टि

5.2 शोध निष्कर्ष
5.3 शैक्षिक उपयोगिता
5.4 शोध निष्कर्षों की आलोचना
5.5 भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

13. सन्दर्भ

1. *Annual Status Education Report (Rural) 2018,* ASER Centre, New Delhi, 2018
2. Best, John W., Kahn, Janees V. and Jha, Arvind K., *Research in Education,* Person India Education Services Pvt Ltd, Chennai, 2017
3. भटनागर, आर.पी.,भटनागर ए.बी, भटनागर, अनुराग, *शैक्षिक अनुसंधान की विधियां,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2015
4. Chavana, Sunita S., *'Study of the Quality of Education Inparted in Lower Primary Schools',* Pune University, 2011
5. Dhankar, Rohit, *'Curruculum Framework in search of a coherent epistemology :A case study of Indian National Curriculum Frameworks'* Annual Confrence, New College, Oxford, 2012
6. Deshpande, Amruta, Balkrishna,*'A Study of Creativity in Relation to Guilford Intellect Model, Adjustment, Scholastic Achievements and Environment among Upper Primary School Students in Marathwada Region'* Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded (Maharashtra), 2017
7. *Evaluation of In Service Training Programmes of NCERT*, NCERT Publication, New Delhi, 2016
8. Ghosh, Sananda, *'Education In Emerging Indian Society'*, HHI Learning Pvt Ltd, New Delhi, 2009
9. Hughes, David and Hitchcock, Graham, *'Reacherch and the Teacher'*, Routlet, New York, 2009
10. Jyoti, *'Creativity among High School Students of Haryana in Relation to Intelligence and Level of Aspiration'* Maharshi Dayanand University, Rohtak, 2012
11. Jain MK, *'Commettees and Commissions Elemenrary Education'*, Shipra Publications Delhi, 2004
12. कुमार, ललित, आलम, इम्तियाज, जुलाई, 2014, एनसीईआरटी, *'भारतीय आधुनिक शिक्षा, उच्चतर माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का जेण्डर, विद्यालय के प्रकार, अध्ययन के विषय एवं स्थान के सन्दर्भ में अध्ययन,'* पृष्ठ 84–93
13. Kosnik, clave and Beck, clive, *'Innovations in Teacher Education',* State university of New York Press, Albany, 2006
14. Kapoor, Saumya, *' To study of effect to Emotional Maturity on stress and self confidence of school students'*, Devi Adilya Vishvidyalaya, Indore, 2012
15. Lekhi, Venita, *'A Study of Emotional Maturity of Adolescent in Relation to Cognitive and Non-Cognitive Variables'* Punjab University, Chandigarh, 2005

16. मानव, आरएन, *'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'*, आर लाल बुक डिपो, मेरठ, 2014
17. *'Learning without Burden'* NCERT, New Delhi, 1993
18. Mehrotra, Sushma, *'Effect of Imagery and Personality trends on Creativity among Pre-Adolescent Children'*, SNDT, Women's University, Bombay, 1995
19. *'National Achievement Survey (NAS)'* National Council for Educational Research and Training, 2018
20. *'National Curriculum Framework 2005,'* NCERT, 2005, New Delhi
21. MHRD, Government of India, *'New Education Policy, 2019' (Draft)*
22. ओ' लियरी, ज़िना, *'रिसर्च प्रोजेक्ट करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन,'* सेज पब्लिकेशन्स इंडिया प्रा.लि. इंडिया, 2017
23. Patel, Rupesh, *'Development of Instructional Strategy for Primary School Teachers to Teach Creative and Critical Thinking Skill'* The Maharaja Sayajirao University of Baroda, 2010
24. परिहार, अमरजीत सिंह, *'शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन,'* आर लाल बुक डिपो, मेरठ,2014
25. Parashar, Ravindra Kumar, Singh, Vikramjit, May 2011, NCERT, Journal of Indian Education, *'Strategies of Classroom Transaction of Science at Upper Primary Level in the Light of NCF 2005'*
26. Paul, Shimna,*'A Study on the Effectiveness of Ideal strategy in Metacognition and 5 E Model in Constructivism on the Achievement in Physics, Scientific Creativity and thinking skill among the Senior Secondary Students with different Creativity'*, Manglore University, Karnataka, 2013
27. Ramchandran, Padma and Ramkumar, Vasamtha, *'Education in India,'* National Book Trust, New Delhi, 2014
28. Srilata, B, *'Emotional Maturity, Social Maturity and Moral Judgement of the student Teachers of Guntur District'*, Moulana Azad National Urdu University, Hyderabad, 2012
29. सिंह, गया और कुमार अनिल, *'शैक्षिक अनुसंधान की विधियां,'* आर लाल बुक डिपों, मेरठ, 2015
30. *Teacher Educatin for Curriculum Renewal, NCF 2005*, NCERT, New Delhi, 2005
31. Thakur A.S. and Berwal, Sandeep, *'Deevelopment of Education System in India'*, Shipra Publications, Delhi 2015
32. Tiwari, Basuba, *'Development and Tryout of Instruction Package for Enhancing of Thinking skills of Primary School Students'*, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar, Gujrat, 2012
33. *'उत्तराखण्ड के अनुभव'*, रिसर्च ग्रुप, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलूरू, 2017–18.
34. आर.एन., और शुक्ला डी.पी, *'रिसर्च मैथ्डोलॉजी,'* कालेज बुक डिपो. जयपुर, 2007
35. Swartz and McGuinness, *'Developing and Assessing Thinking Skills'*, Project Final Report February, 2014
36. शुक्ला, संजीव, भारतीय आधुनिक शिक्षा, *'माध्यमिक शिक्षा की की गुणात्मकता : चुनौतियां और सम्भावनाएं'* 'एनसीईआरटी, अप्रैल 2011 पृष्ठ 38–43
37. सिंह, अरूण कुमार, *'उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान'*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2006
38. सिंह, अरूण कुमार, *'संज्ञानात्मक मनोविज्ञान'*, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2006

39. Wani, Mukhtar Ahmad,'*A Study of Emotional Maturity and Achievement Motivation of Senior Secondary School Students in Relation to Their Home and School Environment*' Jamia Millia Islamia, New Delhi, 2018